Ramazan Ki Shaan (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 242
Weekly Booklet : 242

अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मुहम्मद इल्यास क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ की किताब
"फ़ैज़ाने रमज़ान" से रमज़ानुल मुबारक के बारे में मुख़्तलिफ़ फ़रामीन

रमज़ान की शान

सफ़हात 20

रमज़ान में चार बातों की कसरत करो 03
पांच चीज़ें जो पहले किसी नबी को न मिलीं 05
वोह अफ़राद जिन के खाने का हिसाब न होगा 14
रमज़ान में प्यारे आक़ा की सख़ावत 15

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

रमज़ान की शान

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : **"रमज़ान की शान"** पढ़ या सुन ले उसे माहे रमज़ान का क़द्रदान बना और सारी ज़िन्दगी गुनाहों से बच कर नेकियों में गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने माहे रमज़ान को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख़्स शक़ी (या'नी बद बख़्त) है। जिस ने अपने वालिदैन या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है।

(معجم اوسط، 2/62، حدیث:3871)

تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दो नूर

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि मैं ने उम्मते मुह़म्मद को दो नूर अ़त़ा किये हैं ताकि वोह दो अंधेरों के ज़रर (या'नी नुक़्सान) से मह़फ़ूज़ रहें। मूसा कलीमुल्लाह

عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! वोह दो नूर कौन कौन से हैं ? इर्शाद हुवा : नूरे रमज़ान और नूरे कुरआन । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : दो अंधेरे कौन कौन से हैं ? फ़रमाया : एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का । (درۃ النّاصحین، ص9)

आ़सियों की मग़्फ़िरत का ले कर आया है पयाम झूम जाओ मुजरिमो ! रमज़ां महे ग़ुफ़्रान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रोज़े से सिह़्ह़त मिलती है

अमीरुल मुअमिनीन मौलाए काएनात, ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : बेशक **अल्लाह** पाक ने बनी इसराईल के एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि आप अपनी क़ौम को ख़बर दीजिये कि जो भी बन्दा मेरी रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखता है तो मैं उस के जिस्म को सिह़्ह़त भी इनायत फ़रमाता हूं और उस को अ़ज़ीम अज्र भी दूंगा ।

(شعب الایمان، 3/412، حدیث:3923)

दो जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

''तुझ पे सदक़े जाऊं रमज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है'' के 31 हुरूफ़ की निस्बत से शाने रमज़ान के बारे में 31 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़ज़मत वाला बरकत वाला महीना आया, वोह महीना जिस

में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े **अल्लाह** पाक ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम (या'नी तरावीह़) तत़व्वोअ़ (या'नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस में जिस ने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये। येह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या'नी ग़म ख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है। जो इस में रोज़ादार को इफ़्त़ार कराए उस के गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी। और इस इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा, बिग़ैर इस के कि उस के अज्र में कुछ कमी हो।'' हम ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **: अल्लाह** पाक येह सवाब तो उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को **अल्लाह** पाक मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा। यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का अव्वल (या'नी इब्तिदाई दस दिन) रह़मत है और इस का औसत़ (या'नी दरमियानी दस दिन) मग़्फ़िरत है और आख़िर (या'नी आख़िरी दस दिन) जहन्नम से आज़ादी है। जो अपने ग़ुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) **अल्लाह** पाक उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा। इस महीने में चार बातों की कसरत करो, उन में से दो ऐसी हैं जिन के ज़रीए तुम अपने रब को राज़ी करोगे और बक़िय्या

दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं। पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए तुम अपने रब को राज़ी करोगे वोह येह हैं : (1) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देना (2) इस्तिग़फ़ार करना। जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें ग़ना (बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं : (1) **अल्लाह** पाक से जन्नत त़लब करना (2) जहन्नम से **अल्लाह** पाक की पनाह त़लब करना। (شعب الایمان، 3/305، حدیث:3608۔ صحیح ابن خزیمہ، 3/192، حدیث:1887)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴿2﴾ जब माहे रमज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** पाक उस के हर सज्दे के बदले में उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का घर बनाता है। पस जो कोई माहे रमज़ान का पहला रोज़ा रखता है तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और उस के लिये सुब्ह़ से शाम तक 70 हज़ार फ़िरिश्ते दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह सज्दा करता है उस के हर सज्दे के बदले उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अ़त़ा किया जाता है कि उस के साए में (घोड़े) सुवार पांच सो बरस तक चलता रहे।

(شعب الایمان، 3/314، حدیث:3635 ملخصا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ जब रमज़ान की पहली रात होती है तो **अल्लाह** पाक अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** पाक किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा और हर रोज़ दस लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने

भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है। फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है, मलाएका ख़ुशी करते हैं और **अल्लाह** पाक अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "ऐ गिरौहे मलाएका ! उस मज़दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने इन सब को बख़्श दिया।" (جمع الجوامع، 1/345، حدیث:2536)

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तू ने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿4﴾ बेशक जन्नत साल के शुरूअ़ से अगले साल तक रमज़ानुल मुबारक के लिये सजाई जाती है और फ़रमाया : रमज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों से बड़ी बड़ी आंखों वारी हूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं : "ऐ परवर्दगार ! अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शौहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों।" (شعب الایمان، 3/312، حدیث:3633)

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर फ़ज़्ले रब से मग़्फ़िरत का हो गया सामान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿5﴾ मेरी उम्मत को माहे रमज़ान में पांच चीज़ें ऐसी अ़ता की गईं जो मुझ से पहले किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام को न मिलीं : (1) जब रमज़ानुल मुबारक की पहली रात होती है तो **अल्लाह** पाक उन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ **अल्लाह** पाक नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे

कभी भी अ़ज़ाब न देगा। (2) शाम के वक़्त उन के मुंह की बू (जो भूक की वज्ह से होती है) **अल्लाह** पाक के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी बेहतर है। (3) फ़िरिश्ते हर रात और दिन उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआएं करते रहते हैं (4) **अल्लाह** पाक जन्नत को हुक्म फ़रमाता है : "मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अ़न्क़रीब वोह दुन्या की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राहत पाएंगे।"(5) जब माहे रमज़ान की आख़िरी रात आती है तो **अल्लाह** पाक सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह लैलतुल क़द्र है ? इर्शाद फ़रमाया : नहीं, क्या तुम नहीं देखते कि मज़दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।

(شعب الایمان، 3/303، حدیث:3603)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿6﴾ रमज़ान शरीफ़ की हर शब आस्मानों में सुब्हे़ सादिक़ तक एक मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला फ़िरिश्ता) येह निदा (ए'लान) करता है : ऐ भलाई त़लब करने वाले ! इरादा पुख़्ता कर ले और ख़ुश हो जा, और ऐ बुराई का इरादा रखने वाले ! बुराई से बाज़ आ जा। है कोई मग़्फ़िरत का त़लबगार ! कि उस की त़लब पूरी की जाए। है कोई तौबा करने वाला ! कि उस की तौबा क़बूल की जाए। है कोई दुआ़ मांगने वाला ! कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए। है कोई साइल ! कि उस का सुवाल पूरा किया जाए। **अल्लाह** पाक रमज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्त़ार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है। (شعب الایمان، 3/304، حدیث:3606)

वासिता रमज़ान का या रब हमें तू बख़्श दे नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿7﴾ माहे रमज़ान में (घर वालों के) ख़र्च में कुशादगी करो क्यूं कि माहे रमज़ान में ख़र्च करना **अल्लाह** पाक की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।

(فضائل شہر رمضان مع موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 1/368، حدیث:24)

भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿8﴾ रोज़ा और क़ुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेंगे। रोज़ा अ़र्ज़ करेगा : "ऐ रब्बे करीम ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा।" क़ुरआन कहेगा : "मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के लिये क़बूल कर।" पस दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी। (مسند امام احمد، 2/586، حدیث:6637)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿9﴾ जिस ने मक्कए मुकर्रमा में माहे रमज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो **अल्लाह** पाक उस के लिये और जगह के एक लाख रमज़ान का सवाब लिखेगा और हर दिन एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रात एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सुवार कर देने का सवाब और हर दिन में नेकी और हर रात में नेकी लिखेगा। (ابن ماجہ، 3/523، حدیث:3117)

या इलाही तू मदीने में कभी रमज़ां दिखा मुद्दतों से दिल में येह अ़त्तार के अरमान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿10﴾ बेशक **अल्लाह** पाक ने रमज़ान के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये और मैं

ने तुम्हारे लिये रमज़ान के क़ियाम को सुन्नत क़रार दिया है लिहाज़ा जो शख़्स रमज़ान में रोज़े रखे और ईमान के साथ और हुसूले सवाब की निय्यत से क़ियाम करे (या'नी तरावीह़ पढ़े) तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे विलादत के दिन उस को उस की मां ने जना था। (نَسائی، ص369، حدیث:2207)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿11﴾ आदमी के हर नेक काम का बदला दस से सात सो गुना तक दिया जाता है, **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : اِلَّا الصَّوْمَ فَاِنَّهٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِهٖ या'नी सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा। **अल्लाह** पाक का मज़ीद इर्शाद है : बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वज्ह से तर्क करता है। रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं, एक इफ़्तार के वक़्त और एक अपने रब से मुलाक़ात के वक़्त, रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है। (مسلم، ص580، حدیث:1151)

रोज़ादारो झूम जाओ क्यूं कि दीदारे ख़ुदा ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रह़मान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿12﴾ रोज़ा सिपर (या'नी ढाल) है और जब किसी के रोज़े का दिन हो तो न बेहूदा बके और न ही चीख़े, फिर अगर कोई और शख़्स इस से गालम गलोच करे या लड़ने पर आमादा हो तो कह दे : मैं रोज़ादार हूं।

(بخاری، 1/624، حدیث:1894)

बे जा बक बक की ख़स्लत भी टल जाएगी मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
गीत गाने की आ़दत निकल जाएगी मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ जिस ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** पाक की रिज़ा हासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक कव्वा जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए। (مسندِ ابی یعلیٰ، 1/383، حدیث:917)

आ़सियों की मग़्फ़िरत का ले कर आया है पयाम झूम जाओ मुजरिमो ! रमज़ां महे ग़ुफ़्रान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ जिस ने माहे रमज़ान का एक रोज़ा भी ख़ामोशी और सुकून से रखा उस के लिये जन्नत में एक घर सब्ज़ ज़बर जद या सुर्ख़ याक़ूत का बनाया जाएगा। (معجم اوسط، 1/379، حدیث:1768)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾15﴿ हर शै के लिये ज़कात है और जिस्म की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा आधा सब्र है। (ابنِ ماجہ، 2/347، حدیث:1745)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾16﴿ रोज़ादार का सोना इबादत और उस की ख़ामोशी तस्बीह़ करना और उस की दुआ़ क़बूल और उस का अ़मल मक़्बूल होता है। (شعب الایمان، 3/415، حدیث:3938)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ **अल्लाह** पाक माहे रमज़ान में रोज़ाना इफ़्तार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वज्ह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात को ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब तक) की हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता

है जो अ़ज़ाब के ह़क़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।

(مسند الفردوس، 3/320، حدیث:4960)

भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿18﴾ जो बन्दा रोज़े की ह़ालत में सुब्ह़ करता है उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करते हैं और आस्माने दुन्या पर रहने वाले (फ़िरिश्ते) उस के लिये सूरज डूबने तक मग़्फ़िरत की दुआ़ करते रहते हैं। अगर वोह एक या दो रक्अ़तें पढ़ता है तो येह आस्मानों में उस के लिये नूर बन जाती हैं और ह़ूरे ई़न (या'नी बड़ी आंखों वाली ह़ूरों) में से उस की बीवियां कहती हैं : ऐ **अल्लाह** पाक ! तू इस को हमारे पास भेज दे हम इस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ हैं। और अगर वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ یا سُبْحَانَ اللّٰهِ یا اَللّٰهُ اَکْبَرُ पढ़ता है तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस का सवाब सूरज डूबने तक लिखते रहते हैं।

(شعب الایمان، 3/299، حدیث:3591)

हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की या इलाही मग़्फ़िरत कर बे कसो मजबूर की

नामए बदकार में ह़ुस्ने अ़मल कोई नहीं लाज रखना रोज़े महशर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿19﴾ जो ह़लाल कमाई से रमज़ान में रोज़ा इफ़्तार करवाए रमज़ान की तमाम रातों में फ़िरिश्ते उस पर दुरूद भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) उस से मुसाफ़ह़ा करते हैं और जिस से जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) मुसाफ़ह़ा कर लें उस की आंखें अश्कबार हो जाती हैं और उस का दिल नर्म हो जाता है। (جمع الجوامع، 7/217، حدیث:22534)

या ख़ुदा मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा बाग़े फ़िरदौस मर्हमत फ़रमा
हो न अ़त्तार ह़श्र में रुस्वा बे ह़िसाब इस की मग़्फ़िरत फ़रमा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴾20﴿ जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो **अल्लाह** पाक को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना पीना छोड़ दिया है। (بخاری،1/628،حدیث:1903) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बुरी बात से मुराद हर ना जाइज़ गुफ़्त्गू है जैसे झूट, बोहतान, ग़ीबत, तोहमत, गाली, ला'न ता'न वग़ैरा जिन से बचना ज़रूरी है। (مرقاة المفاتيح،4/491) एक और मक़ाम पर फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "सिर्फ़ खाने और पीने से बाज़ रहने का नाम रोज़ा नहीं बल्कि रोज़ा तो येह है कि लग़्व और बेहूदा बातों (या'नी वोह बात जिस के करने में मआ़सी (या'नी ना फ़रमानी) है उस) से बचा जाए।" (مستدرک،2/67،حدیث:1611)

बक बक की कहीं लत न जहन्नम में गिरा दे अल्लाह ज़बां का हो अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴾21﴿ रोज़े की ह़ालत में जिस का इन्तिक़ाल हुवा, **अल्लाह** पाक उस को क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है।

(مسند الفردوس،3/504،حدیث:5557)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴾22﴿ रमज़ान में ज़िक्रुल्लाह करने वाले को बख़्श दिया जाता है और इस महीने में **अल्लाह** पाक से मांगने वाला मह़रूम नहीं रहता।

(شعب الایمان،3/311،حدیث:3627)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

﴾23﴿ येह रमज़ान तुम्हारे पास आ गया है, इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है। महरूम है वोह शख़्स जिस ने रमज़ान को पाया और उस की मग़्फ़िरत न हुई कि जब उस की रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी ! (معجم اوسط، 5/366، حدیث:7627)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾24﴿ पांचों नमाज़ें और जुमुआ अगले जुमुए तक और माहे रमज़ान अगले माहे रमज़ान तक गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए। (مسلم، ص144، حدیث:233)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾25﴿ अगर बन्दों को मा'लूम होता कि रमज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल रमज़ान ही हो।

(صحیح ابن خزیمہ، 3/190، حدیث:1886)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾26﴿ जिस ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बिग़ैर रुख़्सत व बिग़ैर मरज़ इफ़्तार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का रोज़ा भी उस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले। (ترمذی، 2/175، حدیث:723) या'नी वोह फ़ज़ीलत जो रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखने की थी अब किसी त़रह़ नहीं पा सकता। (बहारे शरीअ़त, 1/985 मुलख़्ख़सन)

दो जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾27﴿ मैं सोया हुवा था तो ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे एक

दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए, जब मैं पहाड़ के दरमियानी हिस्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा : "येह कैसी आवाज़ें हैं ?" तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उलटा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़ दिये गए थे जिन से ख़ून बह रहा था, तो मैं ने पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" तो मुझे बताया गया कि "येह लोग रोज़ा इफ़्तार करते थे क़ब्ल इस के कि रोज़ा इफ़्तार करना ह़लाल हो।" (صحیح ابن حبّان، 9/286، حدیث:7448)

बे नमाज़ी रहें कुछ न रोज़े रखें इन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿28﴾ मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे रमज़ान का ह़क़ अदा करती रहेगी। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रमज़ान के ह़क़ को ज़ाएअ़ करने में इन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में इन का ह़राम कामों का करना।" फिर फ़रमाया : "जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले रमज़ान तक **अल्लाह** पाक और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते रहेंगे पस अगर येह शख़्स अगला माहे रमज़ान पाने से पहले ही मर गया तो इस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो इसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो क्यूं कि जिस त़रह़ इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ गुनाहों का भी मुआ़मला है।" (معجم صغیر، 1/248)

تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सह़री के मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾29﴿ रोज़ा रखने के लिये सह़री खा कर क़ुव्वत ह़ासिल करो और दिन (या'नी दोपहर) के वक़्त आराम (या'नी क़ैलूला) कर के रात की इ़बादत के लिये त़ाक़त ह़ासिल करो। (ابن ماجہ، 2/321، حدیث:1693)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾30﴿ सह़री पूरी की पूरी बरकत है पस तुम न छोड़ो चाहे येही हो कि तुम पानी का एक घूंट पी लो। बेशक **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते रह़मत भेजते हैं सह़री करने वालों पर। (مسند امام احمد، 4/88، حدیث:11396)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾31﴿ तीन आदमी जितना भी खा लें उन से कोई ह़िसाब न होगा बशर्ते कि खाना ह़लाल हो (1) रोज़ादार इफ़्त़ार के वक़्त (2) सह़री खाने वाले (3) मुजाहिद जो **अल्लाह** पाक के रास्ते में सरह़दे इस्लाम की ह़िफ़ाज़त करे। (معجم کبیر، 11/285، حدیث:12012)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़रमाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाया करते : उस महीने को ख़ुश आमदीद जो हमें पाक करने वाला है। पूरा रमज़ान ख़ैर ही ख़ैर (या'नी भलाई ही भलाई) है दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम, इस महीने में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने का दरजा रखता है। (تنبیہ الغافلین، ص177)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़रामीने उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا

﴾1﴿ जब माहे रमज़ान तशरीफ़ लाता तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

रंग मुबारक मुतग़य्यर (या'नी तब्दील) हो जाता और नमाज़ की कसरत फ़रमाते और ख़ूब दुआएं मांगते। (شعب الایمان، 3/310، حدیث:3625)

तुझ पे सदक़े जाऊं रमज़ां तू अ़ज़ीमुश्शान है तुझ में नाज़िल हक़ तआ़ला ने किया क़ुरआन है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿2﴾ जब माहे रमज़ान आता तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीस दिन नमाज़ और नींद को मिलाते थे पस जब आख़िरी अ़शरा होता तो **अल्लाह** पाक की इ़बादत के लिये कमर बस्ता हो जाते। (مسند امام احمد، 9/338، حدیث:24444)

इ़बादत में तिलावत में रियाज़त में लगा दे दिल

महे रमज़ान के सदक़े में फ़रमा दे करम मौला

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़रामीने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا

﴿1﴾ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से बढ़ कर सख़ी थे और रमज़ान शरीफ़ में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ख़ुसूसन) बहुत ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते थे। जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام रमज़ानुल मुबारक की हर रात में मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते और रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते। जब भी ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आते तो आप तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर (या'नी भलाई) के मुआ़मले में सख़ावत फ़रमाते। (بخاری، 1/9، حدیث:6)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿2﴾ जब माहे रमज़ान आता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर क़ैदी

को रिहा कर देते और हर साइल को अ़ता फ़रमाते।

(شعب الایمان، 3/311، حدیث:3629)

क्या आक़ा की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में क़ैदी होते थे ?

मश्हूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान कर्दा ह़दीसे पाक के ह़िस्से : "हर क़ैदी को रिहा कर देते" के तह़्त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 142 पर फ़रमाते हैं : ह़क़ येह है कि यहां क़ैदी से मुराद वोह शख़्स है जो ह़क़्कुल्लाह या ह़क़्कुल अ़ब्द (या'नी बन्दे के ह़क़) में गिरिफ़्तार हो और आज़ाद फ़रमाने से उस के ह़क़ अदा कर देना या करा देना मुराद है।

फ़रमाने ह़ज़रते का 'बुल अह़ूबार رَضِیَ اللهُ عَنْه

बरोज़े क़ियामत एक मुनादी इस त़रह़ निदा करेगा, हर बोने वाले (या'नी अ़मल करने वाले) को उस की खेती (या'नी अ़मल) के बराबर अज्र दिया जाएगा सिवाए क़ुरआन वालों (या'नी आ़लिमे क़ुरआन) और रोज़ादारों के कि उन्हें बेह़द्दो बे ह़िसाब अज्र दिया जाएगा। (شعب الایمان، 3/413، حدیث:3928)

रोज़ादारो ! झूम जाओ क्यूं कि दीदारे ख़ुदा ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रह़मान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

फ़रमाने ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : माहे रमज़ान में एक दिन का रोज़ा रखना एक हज़ार दिन के रोज़ों से अफ़्ज़ल है और माहे रमज़ान में एक मरतबा तस्बीह़ करना (سُبْحٰنَ الله कहना) इस माह के इ़लावा एक हज़ार मरतबा तस्बीह़ करने (سُبْحٰنَ الله कहने) से अफ़्ज़ल है और माहे रमज़ान में एक रक्अ़त पढ़ना ग़ैरे रमज़ान की एक हज़ार रक्अ़तों से अफ़्ज़ल

है। (تفسیر درمنثور، 1/454)

फ़रमाने दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ

रोज़े की ह़क़ीक़त "रुकना" है और रुके रहने की बहुत सी शराइत़ हैं मसलन मे'दे को खाने पीने से रोके रखना, आंख को बद निगाही से रोके रखना, कान को ग़ीबत सुनने, ज़बान को फ़ुज़ूल और फ़ितना अंगेज़ बातें करने और जिस्म को हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से रोके रखना रोज़ा है। जब बन्दा इन तमाम शराइत़ की पैरवी करेगा तब वोह ह़क़ीक़तन रोज़ादार होगा। (کشف المحجوب، ص353،354)

वासित़ा रमज़ान का या रब हमें तू बख़्श दे नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रोज़े के तीन दरजे

रोज़े के तीन दरजे हैं ﴿1﴾ अ़वाम का रोज़ा ﴿2﴾ ख़वास का रोज़ा ﴿3﴾ अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा।

अ़वाम का रोज़ा : रोज़े के लुग़वी मा'ना हैं "रुकना" लिहाज़ा शरीअ़त की इस्ति़लाह़ में सुब्हे सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से रुके रहने को रोज़ा कहते हैं और येही अ़वाम या'नी आ़म लोगों का रोज़ा है।

ख़वास का रोज़ा : खाने पीने और जिमाअ़ से रुके रहने के साथ साथ जिस्म के तमाम आ'ज़ा को बुराइयों से "रोकना" ख़वास या'नी ख़ास लोगों का रोज़ा है। (बहारे शरीअ़त, 1/966, ह़िस्सा : 5)

अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा : अपने आप को तमाम तर उमूर से रोक कर सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, येह

अख़्स्सुल ख़वास या'नी ख़ासुल ख़ास लोगों का रोज़ा है।

दीजिये कुफ़्ले मदीना दीजिये कीजिये रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन
हर वली का वासित़ा अ़त्तार पर कीजिये रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़रमाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

इस माहे मुबारक के कुल चार नाम हैं : ﴾1﴿ माहे रमज़ान ﴾2﴿ माहे सब्र ﴾3﴿ माहे मुआसात और ﴾4﴿ माहे वुस्अ़ते रिज़्क़। मज़ीद फ़रमाते हैं : रोज़ा सब्र है जिस की जज़ा रब है और वोह इसी महीने में रखा जाता है इस लिये इसे माहे सब्र कहते हैं। मुआसात के मा'ना हैं भलाई करना। चूंकि इस महीने में सारे मुसल्मानों से ख़ास कर अहले क़राबत से भलाई करना ज़ियादा सवाब है इस लिये इसे माहे मुआसात कहते हैं। इस में रिज़्क़ की फ़राख़ी भी होती है कि ग़रीब भी ने'मतें खा लेते हैं, इसी लिये इस का नाम माहे वुस्अ़ते रिज़्क़ भी है। (तफ़्सीरे नईमी, 2/208)

हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं बरकतें माहे रमज़ां रह़मतों और बरकतों की कान है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **रमज़ान की शान**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

रमज़ान की शान

येह रिसाला (**रमज़ान की शान**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

तहरीरे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه